शान्ति, शक्ति और खुशी की लाइट फैलाकर लाइट हाउस को प्रत्यक्ष करो

आज सूक्ष्मवतन में आप सबकी याद लेकर पहुँची तो क्या देखा – एक सोने की पहाड़ी है, उस पहाड़ी पर बाबा खड़े हैं और पहाड़ी जो नीचे थी वह सारी फूलों से सजी थी। जिस पहाड़ी पर बाबा खड़े थे वहाँ के भिन्न-भिन्न पत्थर ऐसे थे जैसे लाइट के हो, ऐसे दिखाई देता था जैसे एक-एक पत्थर से लाइट निकल रही है और वो पत्थर की लाइट आधे चन्द्रमा की लाइट के समान चमक रही थी। बाबा पहाड़ी पर ऊपर खड़े थे और मैं नीचे से देख रही थी। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे थे और बाबा ने अपने दोनों हाथ इकट्ठे किये फिर ऐसे दोनों हाथ को नीचे किया और मैं नीचे से ऊपर पहुँच गई। आप सभी तो जानते हैं कि बाबा कितना प्यार से बच्चों को मिलते हैं और नैन मुलाकात करते हैं। फिर बाबा ने हमसे पूछा कि बच्ची आज क्या समाचार लाई हो ? मैं मुस्करा रही थी। बाबा ने कहा तुम जहाँ से आई हो, देखो मैं उनको एक सेकण्ड में बुलाता हूँ। बाबा ने एक चुटकी बजाई तो जैसे फ़रिश्ते कोई कहाँ से, कोई कहाँ से उड़ते हुए पहुँच गये और फ़रिश्तों के पंख जो थे - वो थे उमंग-उत्साह के। ऐसे-ऐसे आते गये जैसे तितलियाँ पहाड़ पर नज़र आती हैं। ऐसे लग रहा था जैसे फ़रिश्ते पहाड़ी पर पहुँच गये हैं। मैंने कहा बाबा मैं क्या यादप्यार दूँ, ये तो अपने आप पहुँच गये हैं। सीन तो वहाँ की वण्डरफुल होती ही है, आप भी बुद्धियोग से इमर्ज कर सकते हैं। तो बाबा ने मीठी-मीठी दृष्टि से सभी का यादप्यार लिया भी और यादप्यार दिया भी।

उसके बाद बाबा ने कहा – देखो अभी मैं एक स्विच आन करता हूँ। बाबा ने नीचे पांव से दबाया, वहाँ तो आटोमेटिक है, तो सभी के मस्तक से तीन लाइट निकली, वह तीन रंग की लाइट मस्तक में लम्बी किरणों की तरह थी। उन लम्बी किरणों में तीन शब्द लिखे थे - शान्ति, शक्ति और खुशी। वो लाइट चारों ओर जैसे लम्बी किरणों में फैल रही थी। सभी के मस्तक से वह लाइट चारों ओर दूर-दूर सबके द्वारा पड़ रही थी। फिर बाबा ने कहा – बच्चों को 'पीस विलेज' विशेष किसलिए दिया है ? तो बाबा ने कहा कि यहाँ से सभी को ये तीनों ही लाइट्स देनी हैं क्योंकि

आज दुनिया में और सब साधन हैं, वह भी खास अमेरिका में तो सभी साधन हैं। लेकिन शान्ति नहीं है क्योंकि दिमाग भी फास्ट है। चलना, फिरना, खाना पीना भी फास्ट है, फास्ट लाइफ है। फिर बाबा ने कहा कि शक्ति भी नहीं है। प्लैन्स ज्यादा बनते हैं, प्रैक्टिकल में नहीं है। बाबा ने अमेरिका के बारे में कहा कि यदि यहाँ लोगों के फेस भी देखेंगे तो बहुत ही आफीशल हैं। चेहरे पर खुशी दिखाई नहीं देती, जैसे मर्ज है, इमर्ज नहीं है। सीरियस नहीं हैं लेकिन बहुत आफीशल दिखाई देते हैं। इसलिए इन तीनों चीज़ों की यहाँ विशेष आवश्यकता है। इसीलिए मैने सभी बच्चों को इमर्ज किया है। बाबा ने कहा कि बच्चों को अभी सारे विश्व में तो स्मृति से मन्सा सेवा करनी ही है परन्तु पहले 'चैरिटी बिगेन्स एट होम' क्योंकि अमेरिका से आवाज़ निकालना है। खुशी मिल गई, शान्ति मिल गई, शक्ति मिल गई। फिर बाबा ने कहा अभी भी देखो जब कोई भी पीस विलेज पहुँचते हैं तो पहुँचते ही उनको अनुभव होता है कि हल्के हो गये हैं। तो आप सबकी सेवा है, जो दूर बैठे भी सबको अनुभव हो कि कोई ऐसा लाइट हाउस है। जैसे लाइट हाउस होता एक जगह है, लगता है कहीं से लाइट आ रही है। तो अमेरिका निवासियों को लाइट हाउस का अनुभव हो। उन्हें लगे कि यहाँ अमेरिका में कोई शान्ति की खान है। जब पता चलेगा तो भाग-भाग कर लेने के लिए आयेंगे। तो ऐसी सेवा करनी है। न्युयार्क में या कैनाडा में कहाँ भी हो... लेकिन ऐसे वायब्रेशन इस स्थान को दो जो ये वर्ल्ड में प्रसिद्ध हो जाए। जैसे वर्ल्ड में व्हाइट हाऊस प्रसिद्ध है, ऐसे 'लाइट हाऊस' प्रसिद्ध हो जाए। ऐसे अनुभव हो कि हमें वहाँ जाना है।

फिर बाबा ने पीस विलेज में रहने वाले सेवाधारियों को वतन में इमर्ज कर आगे बुलाया। पूरे वतन में जैसे रूहे गुलाब की खुशबू फैली हुई थी। और हमारा यह जो बैज है, ऐसे गुलाब के पुष्प के ही बैज थे, जो बाबा ने एक-एक बच्चे को गुलाब के पुष्प का बैज लगाया। फिर धीरे-धीरे यह सीन मर्ज होती गई और मैं अकेली रह गई फिर बाबा ने कहा बच्ची तुम्हें तो आने जाने का अभ्यास है। अभी जाना ही पड़ेगा। सभी को बापदादा की तरफ से अरब-खरब गुणा याद प्यार देना। ऐसे यादप्यार लेते हुए मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।